

॥ निवेदन ॥

अनेकेर मतो आमिओ हिमालयेर आकर्षण बोध करेछि वार वार । घुरेछि, देखेछि— नगाधिराजके आवार देखार व्याकुल वासना निये फिरेछि । निजेर चोखे शुधु नय, हिमालय-रसिक यांवा तांदेर रचनार मध्य दियेओ नाना रसेर स्वाद पेयेछि । ऐइ ये एकके बहुभावे बहु रूपे-रसे देखा, आस्वादन करा— एर विस्लेषण करार, मिलिये देखवार साध थेके ऐइ गवेषणार प्रथम इच्छा जन्मग्रहण करेछिल ।

हिमालय भ्रमण निये बांग्ला एवंग अन्यान्य भाषाय अनेक रचना प्रकाशित हयेछे । ज्ञातीय ग्रन्थागार, साहित्य परिषद् ग्रन्थागार ओ आण्टलिक नाना लाइब्रेरीते ऐइसव ग्रन्थ यथासाध्य देखेछि । पत्र पत्रिकातेओ अनेक रचना पड़ेछि । एदेर वैचित्र्य ओ माधुर्य नानादिक थेके चिन्तके आकृष्ट करेछे । बहु पर्थटकेर सङ्गेओ आलोचना करवार सौभाग्य आमार हयेछे । किन्तु प्रथावद्ध आलोचना करते वसे पठित सब ग्रन्थ ओ ग्रन्थकारके विस्लेषणेर सीमाय आनते पारिनि । ऐ तो आमार पठित ग्रन्थेर कथा ; अनेक हिमालय केन्द्रिक ग्रन्थ आशङ्का करि, संभवतः देखाओ हयनि नाना कारणे । ताते आमार पूर्ण आलोचनार अङ्गहानि हयत हयनि, किन्तु आमार आक्षेप थाकल एवंग यांदेर ग्रन्थ ओ प्रवक्तादि वर्तमान विस्लेषणेर अङ्गीभूत करते पारलाम ना, तांदेर काछे आमि सबिनये क्षमा प्रार्थना करि ।

गवेषणा निबद्ध पाठ करलेइ आमार आलोचनार सीमासर्हद सुस्पष्ट हवे आशा करि ।

आर एकटि कथा । बांग्ला टाईप करार असुविधा उत्तराण्टले ये कत बेशि ता आमि मर्मे मर्मे अनुभव करेछि । कर्मस्थल थेके बेशि दिन कलकाता थाकाओ कठिन । काजेइ वर्षा मुद्रणिकार सञ्चाधिकारी श्रीमती वर्षा सरकारेर (हाकिमपाड़ा, शिलिगुड़ी) आनुकूले गवेषणा-निबद्धकटि मुद्रण करे देओय संभवपर हल ; किन्तु ये-सब आलोकाचित्र, रेखाचित्र ओ मानाचित्र प्रस्तुत करेछिलाम, सबगुले रक करे छेपे देओय गेलना आर्थिक ओ नाना कारणेइ । कयेकटि आलोकाचित्र ओ मानाचित्र मात्र ऐ सङ्गे संयुक्त करा गेल ।

परिशेषे शुधु ऐइ निवेदन ये आमार सीमित क्षमतार मध्ये आमि बिन्दुमात्र शिथिलप्रयत्न हईनि ।